श्री
...ગરસૂરિ
...દિર,
...ીનગર
635

तित्थयर

जैन भवन

वर्ष : २४ अंक : १२
मार्च २००१

ज्ञानी होने का सार यह है कि वह किसी भी प्राणी की हिंसा न करे।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Groundnut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 261001 (U.P.)
Ph: 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax : 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Cal-700 007
Ph: 2384329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Calcutta - 700 001
Ph: 2201001/9146/5055
Telex : 217149 SOIN IN
FAX : 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २४ अंक - १२, मार्च २००१

॥ जैन भवन ॥

संपादन

लता बोथरा

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : **Titthayar,** P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें -
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three year : Rs. 160.00, US $ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007 Phone: 238 2655 and Printed by her
at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Calcutta-700 006 Phone: 241 1006

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	लेख		लेखक	पृ. सं
१.	कर्म की कहानी	-	सुयश मुनिजी पन्यास प्रवर	५२५
२.	मलयासुन्दरी चरित्र	-		५३९

आवरण चित्र–**श्री अष्टापद (कैलाश)**

Composed by :

Anupriya Printers, 6A, Baroda Thakur Lane, Calcutta-700 007, Ph. 218 6084

कर्म की कहानी

पन्यासप्रवर श्री सुयश मुनि जी

वेदनीय कर्म– आत्मा कभी दुःखी नहीं होती है, इसका अपना स्वतः स्वभाव अव्याबाध सुख है। अव्याबाध सुख अर्थात जिस सुख का कोई बाधक नहीं है। यह सुख परमशुद्ध और स्वतः स्फूरित है। परन्तु वेदनीय कर्म के कारण जीव कभी-सुख तो कभी दुःख का अनुभव करता है। इस कर्म के कारण ही पराधीन कृत्रिम सुख-दुःख की अनुभूति होती है। सुख-दुःख की परम्परा चलती रहती है। श्रीराम की धर्म पत्नी सीता का सम्पूर्ण जीवन दुःख से भरा रहा। सब कुछ होते हुए भी आजीवन दुःख ही भोगना पड़ा। वे कर्म राजा को रंक और रंक को राजा बनाता है। सम्मानी को अपमानी, निरोगी को रोगी, रूपवान को कुरुपवान, करोड़पति को रोड़पति या इसके विपरीत फल देता है।

अन्य को सुख देने से, सहयोग करने से, अनुकूल होने से सुख कर्म (शास्त्रीय) भाषा में ज्ञानावेदनीय कर्म मिलता है। इसके विपरीत करने पर अशाला वेदनीय (दुःख) कर्म का बन्ध होता है।

गुरु के प्रति तिरस्कार, क्रोध, निर्दयता, व्रतभंग, कृपणता, माता-पिता के प्रति तिरस्कार, अपमान अशाला वेदनीय कर्म और इसके विपरीत कार्य में शाला वेदनीय कर्म बन्ध होता है।

कोई गाली दे, पत्थर मारे, मजाक करें, आक्षेप करें, वे सब समभाव से सहन करने पर शातावेदनीय कर्म बन्ध होता है इसके विपरीत में अशाता वेदनीय कर्म का बन्ध होता है।

एक था राजकुमार, पारिवारिक अशांति के कारण घर छोड़ जंगल की ओर चला गया। आगे चलकर भयानक लुटेरा बना। उसके पास अपूर्व मारने की शक्ति थी जिसको मारता था, वह अवश्य ही मर जाता था। इसलिये उसका नाम दृढ़ प्रहारी पड़ गया था। एकबार एक गाँव में चोरी करते-करते एक गरीब ब्राह्मण के घर पहुँच गया। ब्राह्मण

गरीब था। उसके पास कुछ भी नही था। कहीं से लाकर बच्चे के लिये थोड़ी खीर बनायी थी। वही लेकर भागने लगा। बीच में रोकने पर ब्राह्मण को मार डाला। उनकी गर्भवती पत्नी बीच में आई तो उसको भी मार डाला। गर्भस्थ शिशु भी मर गया। दरवाजे पर एक गाय बीच में आ गई उसने उसे भी मार डाला। निष्ठुर-निर्दय ने एक साथ चार जीवों की हत्या कर दी। पर बच्चे के रुदन ने उसका जीवन बदल दिया। मुनि के पास जाकर सब कुछ त्याग करके साधु धर्म स्वीकार कर लिया। प्रतिज्ञा की कि जब तक मेरा यह पाप याद रहेगा तब तक अन्न पानी का त्याग। छः महीने की घोर तपस्या के बाद परम ज्ञान की उपलब्धि हुई।

वेदनीय कर्म को मधुयुक्त तलवार कहा गया है। चखने पर प्रथम मीठा लगता है फिर जीभ को काटता है।

वेदनीय कर्म दो प्रकार के होते है।

(१) शातावेदनीय (२) अशातावेदनीय

(४) मोहनीय कर्म–जो भ्रम उत्पन्न करे। सत्य को असत्य और असत्य को सत्यरूप में माने। पदार्थ का विपरीत ज्ञान करावे उसे मोहनीय कर्म कहते है। जैसे–चलती गाड़ी में बैठे व्यक्ति को आस-पास के पेड़-पौधे मकान आदि चलते हुए दिखायी देते हैं। और कभी प्लेटफार्म में गाड़ी पर बैठे होते हैं तब पास की गाड़ी चलती है तो हम जिसमें बैठे हैं वही गाड़ी चल रही है, वैसा भ्रम होता है। कषाय आत्मा के गुणों का घातक है, इससे आत्मा स्वभाव को खो बैठती है। फिर भी कभी-कभी मोहनीय कर्म के कारण इन कषायों को गुणरूप में दर्शाया गया है। जैसे-क्रोध को अनुशासन मान मर्यादा, माया को चतुरता, लोभ को संरक्षकता रूपी गुण बताया गया है।

आत्मा का वास्तविक गुण वीतरागता है। इसमें न राग है न द्वेष। परन्तु मोहनीय कर्म के कारण इसकी विपरीत स्थिति होती है। मोहनीय कर्म के कारण, सत्य है वे मेरा है । "इस सनातन सूत्र को भूलकर" मेरा है वह सत्य है, इस प्रकार स्वयं दृढ़ता से मानता है और प्रचार भी करता है। कदाग्रही बन जाता है। वे मोहनीय कर्मग्रस्त जीव कदाग्रही

बन कर परमात्मा, स्वर्ग नरक, कर्म, जीव, आदि में संदेह करने लगता है। ज्ञानी के कहे हुये वचनों पर विश्वास नहीं करते है। इनकी धारणा होती है कि हमारे पास पूजा करवाने के लिये या कुछ लेने के लिये हमें भयभीत करने के लिये स्वर्ग नरक बताते है। सत्कर्म करने पर मोंक्ष का प्रलोभन देते है, इस प्रकार के अनेक शंका, कुशंका उत्पन्न कराने का कार्य मोहनीय कर्म कराता है। पूर्वोक्त आठ कर्म का राजा नायक मोहनीय कर्म है। मोहनीय कर्म एक जादूगर जैसा है। संसार के प्रत्येक जीव को मोहित करके अपने जाल में फंसा रखता है। इसके पास अपनी सेना है। समय आने पर एक के बाद एक को मैदान में भेजता है। विभिन्न अभिनय में प्रत्येक जीव को अभिनायक जैसे वेश पहना कर नचाता है। मोहनीय कर्म के कारण ही संसार चित्र-विचित्र दिखता है। इसके द्वारा ही स्नेह, संघर्ष होता है।

इस सर्वोत्कृष्ट मनुष्य जीवन में मोहनीय कर्म को नाश करने का प्रयत्न करना चाहिये। मनुष्य जन्म ही एक ऐसा जन्म है, जहाँ विवेक पूर्वक मोहनीय कर्म को नाश किया जा सकता है। यह मोहनीय कर्म परमात्मा के वचन पर श्रद्धा करने में बाधक बनता है। सामान्य व्रत-नियम में मन को कमजोर कर देता है। विपरीत बात किसी के कहने या स्वयं मानने पर भी मोहनीय कर्म का बन्ध होता है।

भगवान महावीर मरीचि के भव में एक शिष्य बनाने के मोंह में झूठ बोले थे, यहाँ भी धर्म है वहाँ भी धर्म है। इस कारण से भगवान महावीर के जीव को अनन्त संसार में भ्रमण करना पड़ता है। सन्मार्ग-धर्म मार्ग का नाश हो वैसी कोई भी बात या आचरण नही करना चाहिये।

धर्म स्थान का द्रव्य, देवद्रव्य खाने से, नष्ट करने से, दुरुपयोग करने से मोहनीय कर्म का बन्ध होता है धर्म स्थान देगें बोलकर न देना, शक्ति होने पर भी सत्कर्म में अर्थ व्यय न करना, अन्य व्यक्ति सत्कर्म में खर्च करता हो तो रोकना, मोहनीय कर्म का बन्ध करता है। धर्म का कोई भी पदार्थ घर के कार्य में लगाना मोहनीय कर्म कारक है धर्म-स्थान

की सामान्य वस्तु भी घर के व्यक्तिगत कार्य में लगाना, देवगुरु, धर्म, शास्त्र और चतुर्विध संघ की निन्दा, विराधना, उपेक्षा अवज्ञा, मोहनीय कर्म का कारक है।

क्रोध, मान, माया, लोभ, करने से अधिक हंसने से, अधिक रोने से, शोक संताप करने से, इच्छित पदार्थ मिलने पर आनन्दित होने से, अनिच्छित पदार्थ मिलने पर दुःखी होने से, भयभीत होने से, घृणा करने से गलत विचार करने से जीव मोहनीय कर्म बन्ध करता है।

मोहनीय कर्म मदिरा जैसा है। जैसे–मदिरा पान करने के बाद व्यक्ति, माता-पिता, पत्नी, बहन में कोई भेद नहीं समझता है वैसे ही मोहित व्यक्ति को अच्छे - बुरे का कोई ज्ञान नही होता है। मोहनीय कर्म वाले जीव को अत्यन्त दुःखमय संसार भी सुखमय लगता है और मोक्षरूप अनन्त सुख का धाम बन्धनरूप लगता है।

मोहनीय कर्म के मुख्य दो भेद है।

(१) दर्शन मोहनीय (२) चारित्र मोहनीय। दर्शन मोहनीय कें और चारित्र मोहनीय के २५ भेद है।

(१) मिथ्यात्व मोहनीय

(२) मिश्र मोहनीय

(३) सम्यक्त्व मोहनीय

४ से ७ अनन्तानुबन्धी, क्रोध, मान, माया, लोभ,

८ से ११ अन्याख्यानी, क्रोध, मान, माया, लोभ

१२ से १५ अप्रत्याख्यानी क्रोध, मान, माया, लोभ

१६ से १९ संज्वलन क्रोध, मान, माया, लोभ

(२०) हास्य (२१) रति (२२) अरति (२३) शोक (२४) भय (२५) जुगुप्सा (२६) पुरुषवेद (२७) स्त्रीवेद (२८) नपुंसक वेद।

विश्व के सभी संसारी जीव को तीन भागों में रक्खा जा सकता है जो मोंहनीय कर्म के प्रभाव से जीवन को विपरीत दिशा में ले जाते है।

(क) सुखी–सुख भ्रष्ट होता है, तो नीच कर्म करते है।

(ख) दुःखी–दुःख से पीड़ित होकर अन्यायी बन जाते है।

(ग) धर्मी–धर्म भ्रष्ट होकर पाप का आचरण करते है।

भौतिक सुखी-जीव भौतिक सुख में इतना डूब जाता है कि एक दिन उसका सुख ही दुःख में बदल जाता है।

मोहनीय कर्म के कारण धर्म में श्रद्धा रखने वाले धर्म साधक शरीर सुख के लिये धर्म को बेचने को तैयार हो जाते है। एक साधक जीवन में जो भी सत्कर्म किया है उसके बदले तुच्छ सुख की कामना कर बैठता है। दुःखी और निराश होकर अकर्तव्य का सेवन करने लगत्ता है। एक मर्यादा को तोड़कर पशुवत् जीवन जीने के लिये मजबूर हो जाता है।

जब ज्ञातावेदनीय कर्म पूर्ण होता है और दुःख का उदय होता है तब व्यक्ति कोई उपाय नहीं मिलने पर आत्महत्या करने के लिये तैयार हो जाता है। जीवन में परिवर्तन कब आता है यह कहना मुश्किल है। कभी-कभी क्षण मात्र कुछ निमित्त मिलने पर जीवन में आमूलचूल परिवर्तन आ जाता है। इसलिये प्रत्येक को हर परिस्थिति के लिये तैयार रहना चाहिये। सांसारिक जीवन में आती हुई सभी प्रकार की परिस्थिति स्वयं द्वारा अर्जित समझना चाहिये। सुख हो या दुःख अपनी संतान समझकर गले लगाना चाहिये। कर्म किसी को नही छोड़ता है, वह फिर राम हो या रावण, महावीर बुद्ध, सीता, गृहस्थी या साधु सभी को अपना-अपना कर्म का फल भोगना पड़ता है।

चक्रवर्ती का सुख भोगता सुमूम चक्रवर्ती को एक दिन दुर्बुद्धि आई। पृथ्वी का छः खंड़ का राज्य तो था ही पर, सांतवा खंड जीतने की इच्छा हुई। अपने सेनापति को बुलाकर आदेश दिया। दिग्विजय की तैयारी करों——हजारों देव द्वारा सेवित रथ तैयार किया गया। इस ससैन्य बैठकर सुभूम चक्रवर्ती समुद्र पार कर रहे थे। दुर्भाग्य से सभी देवों को एक साथ ही विचार आया कि अगर मैं एक रथ नहीं उठाता तो कोई क्षति नहीं होगी क्योंकि अन्य ९९९ तो उठा ही रहे है। ये विचार सभी को एक साथ आया और ससैन्य जल समाधि लेकर सुभूम चक्रवर्ती मरकर सातवीं नरक में चला गया। अधिक सुख में डूबकर बुद्धि भ्रष्ट होना मोहनीय कर्म का फल हो।

मोहनीय कर्म के कारण ही भगवान महावीर के जमाई महाज्ञानी जमाली सत्यधर्म का विरोधी बनकर नये धर्म की स्थापना कर दिये।

मोहनीय कर्म जीवात्मा को बुद्धिभ्रष्ट बनाकर कामान्ध, क्रोधान्ध, मोंहान्ध, सत्तान्ध बना देता है।

इसलिये जीवात्मा को मोहनीय कर्म नाश करने का प्रयत्न करना चाहिये।

(५) आयुष्य कर्म–अजन्मा, अजरामर, आत्मा को जो बारम्बार माता के गर्भ में आने के लिये विवश बनाता है, एक शरीर से अन्य शरीर में बदलता रहता है उससे आयुष्य कर्म कहते थे।

किसी अनुभवी ने लिखा है– पूनरपि जनमं, पूनरपि मरणं, पूनरपि जननी जठरे शयनम्–।

यह महादुःख का कारण है। इच्छा न होते हुए भी जीवात्मा को बारम्बार माता के गर्भ में आना पड़ता है। संसार की चौरासी लाख योनी में भ्रमण करना पड़ता है। जन्म लेने के बाद सुख मिले या दुःख अपना जीवन पूर्ण करना ही पड़ता है। मरने की इच्छा होने पर भी मरना संभव नहीं होता है। जीने की इच्छा हो तो भी मरना अनिवार्य है। यह सब कार्य आयुष्य कर्म करता है।

परमात्मा महावीर भी इस आयुष्य कर्म के सामने असमर्थता दर्शाये। प्रभु महावीर के निर्वाण में भष्म ग्रह चल रहा था। इन्द्र महाराज प्रभु से विनती किये — हे प्रभु! आपका परिनिर्वाण समय कुछ क्षण पूर्व या कुछ क्षण पश्चात् में परिवर्तन करें। क्यों कि यह समय भष्म ग्रहण्ग्रस्त होने के कारण भविष्य में श्री संघ के लिये हानिकारक होगा।भगवान उत्तर दिये—

हे इन्द्र! न भूतो न भविष्यति

न भूतकाल में कभी हुआ है ना भविष्य में ऐसा कभी होने की संभावना है। लाख चेष्टा करने पर भी व्यक्ति अपनी मृत्यु को रोक नहीं सकता हैं। आज के भौतिक वैज्ञानिकों ने हजारों नये-नये आश्चर्य कारी पदार्थों का अविष्कार किया है। आज का अन्तरिक्ष विज्ञान चन्द्रमा में

जाने का प्रमाण दे रहे है। वैज्ञानिकों ने आज सारे विश्व को एक कमरे में बन्ध कर दिया है। मृत्यु को रोकने के लिये हजारों वैज्ञानिक प्रयत्नशील है, पर आज तक असफल रहे हैं। महान सिकन्दर की सत्ता और सम्पत्ति मौत को रोकने में असफल रही।

हमें मौत से नही जन्म से बचने का प्रयत्न करने की आवश्यकता है।

आयुष्य कर्म चार प्रकार के होते है।

(१) देव आयुष्य (२) मनुष्य आयुष्य (३) पशु आयुष्य (४) नरक आयुष्य।

आयुष्य कर्म छोड़कर अन्य सात कर्म का बन्ध जीवन में हर क्षण होता रहता है। इसका प्रमाण फिर कम हो या अधिक। आयुष्य कर्म का बन्ध सम्पूर्ण जीवन में एक ही बार जीवन के अन्तिम तीसरे भाग में होता है। आयुष्य बन्ध समय में जीव की जैसी भावना होती है वैसा ही अगले जन्म के आयुष्य कर्म का बन्ध होता है वैसा ही जन्म मिलता है। एक व्यक्ति आजीवन धर्म-सत्कर्म का पालन करे परन्तु आयुष्य कर्म बन्ध के समय निम्नस्तरीय विचार धारा के कारण पशु आदि का आयुष्य बन्ध कर सकता है। जैसे एक सम्पन्न व्यक्ति के घर पालित कुत्ता। एक सामान्य मनुष्य से अधिक सुख सुविधा मिली है, निश्चय वह पूर्व भव में जीवन भर सत्कर्म किया था, पर अन्तिम आयुष्य पशु का बन्ध किया होगा। दूसरी ओर एक जीवात्मा जीवन भर दुष्कर्म किया जीवन के अन्तिम समय में शुभ भाव लाया। उच्च मनुष्य जीवन मिला, परन्तु पुण्य के अभाव में द्वार-द्वार भीख मांगना पड़ा।

आयुष्य कर्म का बन्ध तीसरे भाग में होता हैं। इसीलिये जैन दर्शन की आचार व्यवस्था में हर तीसरा दिन आराधना त्याग, साधना के लिये रखा गया है। एक पक्ष में १५ तिथि होती हैं। इन १५ दिन में हर तीसरे दिन अर्थात २, ५, ८, ११, १४ इन तिथि में विशेषरूप में आराधना का विधान हैं। इन दिनों में आयुष्य कर्म बन्ध की संभावना अधिक रहती है। इसलिये इन दिनों में हरी वनस्पति खाना निषेध है, क्यों इन हरी वनस्पति में रस अधिक होने से स्वाद के कारण अशुभ कर्म बन्ध का कारण अधिक रहता है। इन दिनों में त्याग, तप, ध्यान, उपासना, का विशेष विधान है।

अशुभ मनोदशा दुर्गति का कारण है। आन्तरिक मनोदशा को चार भागों में विभाजित किया गया है।

(१) रोद्रध्यान (२) आर्तध्यान (३) धर्मध्यान (४) शुक्ल ध्यान।

(१) **रोद्रध्यान** – हमेशा अहित, हिंसा करने की मनोवृति को रोद्रध्यान कहते है। रोद्रध्यान नरक आयुष्य बन्ध का कारक है।

वे रोद्रध्यान चार प्रकार का है।

(क) **हिंसानुबन्धी**–जीव हिंसा का तीव्र परिणाम, हमेशा उसी का विचार तीव्र और कठोर भाव से हिंसा प्रवृति।

(ख) **मृषानुबन्धी**– असत्य बोलने का तीव्रभाव, चिन्तन, आचरण।

(ग) **स्तेयानुबन्धी**– चोरी करने का तीव्र भाव, चिन्तन आचरण।

(घ) **संरक्षणानुबन्धी**–अमर्यादित धन संग्रह करके उसकी रक्षा की तीव्र कामना, चिन्तन, आचरण।

(२) **आर्तध्यान**– इष्ट वस्तु की प्राप्ति या वियोग में शोकाकुल मनोदशा को आर्तध्यान कहते है। इन ध्यान से तिर्यन्व (पशु) गति का कर्म बन्ध होता है।

आर्तध्यान चार प्रकार के होते है।

(क) **इष्ट वियोग**– इष्ट इच्छित वस्तु के वियोग में शोक, संताप, व्यापार में नुकसान होने पर दुश्चिन्ता, पुत्र, पुत्री, पत्नी, माता, पिता के वियोग में कल्पान्तक्षाक्रन्द इष्टवियोग आर्त है।

(ख) **अनिष्ट संयोग**– जो हमें प्रिय नहीं है वे मिलने पर दुःख या उससे दूर करने का असफल प्रयत्न चिन्तन को अनिष्ट संयोग को आर्त्तध्यान कहते है।

(ग) **चिन्ता-रोगादि** शरीर कष्ट में अशुभ की कल्पना। काल्पनिक अशुभ का भय या काल्पनिक दुःख का भय स्मरण को चिन्तन कहते है।

(घ) **अग्रशोच**–भविष्य में सुख की कल्पना, त्याग, तपादि के फलरूप में संसार की कामना। जैन दर्शन के पारिभाषिक शब्द में उसे निर्यामना कहते है। उपरोक्त आर्तध्यान और माया चरण से तिर्यंच (पशु) जन्म होता है।

धर्म ध्यान और शुक्ल ध्यान क्रम से मनुष्य, देव, और अन्तिम मोक्ष का कारक है। इन दो ध्यान को शुभ ध्यान कहते है।

दान देने में रुचि, विनयशीलता, नम्रता मनुष्य का आयुष्य बन्ध कराता है। सम्यक्त्व, श्रावकजीवन, साधुजीवन अनिच्छा युक्त तप, स्वेच्छा से दुःख सहन करने का मनोबल देव आयुष्य का कारक है।

नरक और देव का जीव वहाँ से मर कर मनुष्य या तिर्यंच में ही जन्म लेता है। अर्थात नारकी और देव, मनुष्य और तिर्यंच का आयुष्य बाँधता है। मनुष्य और तिर्यंच चारो गति में आता है। अर्थात मनुष्य और तिर्यंच चारों गति का आयुष्य बन्ध करता है। एक मात्र मनुष्य ही मोक्ष पा सकता है। मनुष्य जीवन पाकर उत्कृष्ट साधना आराधना करने पर ही मुक्ति मिलती है।

आयुष्य कर्म के आधार पर इसके परिणाम के अनुरूप स्थिति, अवस्था, काल आदि का निर्णय होता है। व्यवहार में कभी-कभी इसके विपरीत परिणाम का अनुभव होता है। जीव की कभी-कभी अकाल मृत्यु भी होती है। व्यक्ति स्वेच्छा या अनिच्छा से समय से पूर्व मर जाता है। कभी कहीं ऐसा भी पाया जाता है कि प्रयत्न पूर्वक आत्महत्या करने वाला मरता नही है और कोई जीव सामान्य अल्प कारण से भी मर जाता है।

जीव कैसे भी मरे मरने से पूर्व उस भव का बन्ध आयुष्य कर्म का रजकण (परमाणु) को पूर्ण करना ही पड़ता है।

प्रश्न –आत्म हत्या करने वाले जीव तो मृत्यु से पूर्व मरते है?

उत्तर–नही–। कोई भी जीव आयुष्य कर्म को पूर्ण किये बिना मर ही नहीं सकता है। वे आत्महत्या करने वाले जीव आयुष्य कर्म के परमाणु को प्रयत्न पूर्वक एक साथ नष्ट कर देते हैं। जैसे–एक १० फुट की रस्सी को एक छोर पर आग लगाने से अन्य छोर तक पहुँचने में दो घन्टे लगेंगे। पर सम्पूर्ण रस्सी को एक साथ मिला दिया जाये तो दो मिनट में ही समाप्त हो जायेगा। इसी प्रकार कोई जीव प्रयत्न पूर्वक फाँसी खाकर, जहर खाकर, आग में जलकर ४०/५० वर्ष का आयुष्य का

परमाणु १०/१५ मिनट में समाप्त कर देता है। इसके विपरीत भी कभी-कभी देखा गया है आत्महत्या का प्रयत्न करने वाले जीव को भी मौत नहीं आती है। मृत्यु के निकट पहुँचकर भी जीवात्मा बच जाता है।

अकाल में आयुष्य पूर्ण करके मृत्यु के सात कारण बताते है।

(१) **अध्यावसाय**–आत्मा के अन्दर उत्पन्न होने वाला संकल्प-विकल्प,

वे संकल्प तीन प्रकार के होते है। (१) राग से (२) स्नेह से (३)भय से।

(२) **निमित्त**–अस्त्र, शस्त्र के मार, अग्नि, बिष, आघात आदि का निमित्त।

(३) **आहार** – अति अल्प आहार, अत्यधिक आहार अथवा प्रतिकूल आहार।

(४) **वेदना** –शूल आदि भयंकर शारीरिक वेदना।

(५) **पराघात** –ऊपर से पड़ने पर या उसके ऊपर कोई भारी वस्तु पड़ने पर।

(६) **स्पर्श**–अग्नि, सर्प, विद्युत, विषकन्या के स्पर्श से।

(७) **आणं पाण**–दमा आदि बिमारी के कारण श्र्वासोश्र्वास अधिक लेने से या रुक जाने।

उपरोक्त सात कारण से समय से पूर्व ही आयुष्य कर्म का परमाणु समाप्त हो जाता है।

गर्भ में आते है तभी से जीव का आयुष्य कर्म का परंमाणु क्षय होना प्रारंभ हो जाता है। इस लिये कभी-कभी माता की असावधानी के कारण गर्भावस्था में ही जीव की मृत्यु हो जाती है। उचित उपाय करने से एक सीमा तक जीवात्मा को बचाया जा सकता है।

२४ तीर्थंकर, १२ चक्रवर्ती ९ वासुदेव, ९ प्रतिवासुदेव, ९ बलदेव इन ६३ शलाका पुरुष, चरमशरीरी, देव, नारकी और युगलिक को उपरोक्त सात उपघात नहीं लगता है अर्थात उपरोक्त व्यक्ति की अकाल मृत्यु नहीं होती है।

(६) **नाम कर्म** – संसार रूपी-रंगमंच में विविधरूप बनाने वाले कर्म को नाम कर्म कहते है।

इस संसार में आये दिन कुछ न कुछ आश्चर्यकारी घटना-घटती रहती है। कभी तीन सिंग की गाय, दो मस्तक वाला लड़का, पशु का मुंह युक्त मनुष्य तो कभी मनुष्य का मुँहयुक्त पशु, कभी अधिक अंगोपांग युक्त जीव तो कभी अंगहीन युक्त जीव। इस प्रकार की घटना आये दिन देश-विदेश से सुनने को मिलती रहती है। इस सभी घटनाओं का मुख्य कारण है नामकर्म, जीवात्मा नामकर्म के परमाणु के अनुरूप सुस्वर-कुस्वर, सुरूप-कुरूप, सन्मान अपमान, यश-अपयश को प्राप्त करता है। वस्तु में विचित्रता भी इसी नामकर्म के कारण जैसे-नमक में खट्टापन, मिरची में तीखापन आदि।

अलग-अलग पदार्थ में अलग-अलग रूप, रस, गन्ध स्पर्श, आकार, वजन आदि वे सब नाम कर्म के आधार पर ही निर्माण होता है।

नाम कर्म का कुछ प्रत्यक्ष प्रभाव – (क) स्नेही स्वजन को उनकी रीत की बात कहने पर उन्हें जानकारी देने जावे तब वे स्वीकार न करें, क्रोध करें या अपना शत्रु समझे, तो माने कि यह अनादेय नामकर्म का उदय है। (ख) कोई व्यक्ति समाज विरोध में कार्य करें, जनता का अहित करे, फिर भी जनता उसका समर्थन करें तो समझे कि आदेय नामकर्म का उदय है। (ग) बंश परम्परागत भी नहीं हो और विशेष शिक्षा भी न लेकर सुन्दर गायक बना हो तो समझे कि सुस्वर नाम कर्म का उदय है। (घ) किसी प्रसिद्ध अल्प कार्य करने से अधिक हो तो यशनाम कर्म समझे। (ङ) कोई अनेक शुभ कार्य करने पर भी प्रसिद्धि नहीं मिलती हो या बदनामी मिलती हो तो अपयश नामकर्म का उदय समझें।

संसार की विविधता को देखकर हमें आश्चर्य चकित होने की कोई आवश्यकता नहीं है।

साधारण नाम कर्म के उदय से एक शरीर में अनेक जीव को रहना पड़ता है। जैसे–आलु, प्याज, मूली, आदि सभी प्रकार के जमीन के नीचे होने वाला कन्द जातीय वनस्पति। इनके एक शरीर में अनेक

जीव होता है इसलिये जैन पारिभाषिक शब्द में इन सब को अनन्तकाय होने से खाना निषिध्य है। वनस्पति जीव में मनुष्य जैसी ही संवेदनशीलता है यह बात जैन दर्शन तो प्राचीनकाल से कहता आ रहा है पर आज के भौतिक वैज्ञानिक सर जगदीश चन्द्र बोस ने भी अपने संशोधन पर सिद्ध किया है कि मनुष्य जैसा ही वनस्पति में भी सुख, दुःख, स्नेह, मोह, घृणादि की संवेदनशीलता है।

इसी प्रकार पानी की एक बूँद में ३६५६० चलते फिरते जीव है यह आजका वैज्ञानिक भी स्वीकार करता है। निर्दयता पूर्वक इस सबकी हिंसा से अशुभ कर्म का बन्ध होता है। नाम कर्म के १०३ भेद है।

(१) **गोत्र कर्म** – जिसके आधार पर शरीर का निर्माण होता है उससे गोत्र कर्म कहते है। गोत्र कर्म के आधार पर ही जीवात्मा उच्च-नीच-कुल या जाति में जन्म लेना पड़ता है। गोत्र कर्म का कार्य कुम्भकार जैसा है। इस कर्म के आधार पर ही व्यक्ति के गुण न होते हुए भी जाति या कुल के आधार पर सम्मानित होता है। जैसे–एक ब्राह्मण अनपढ़ है फिर भी–पंडित कहलाता है। पंडित जैसा ही सम्मान को पाता है। इसके विपरीत एक शुद्र निम्न जाति का लिखा-पढ़ा पंडित है, पर पूजा पाठ अनुष्ठान नहीं करवा सकता है। पंडित के नाम से सम्मान नहीं मिलता है। क्योंकि वहाँ उसका नीच गोत्र कर्म कार्य करता है।

भगवान महावीर को ८२ दिन एक भिखारी ब्राह्मणी के गर्भ में रहना पड़ा यह भी नीच गोत्र कर्म का ही परिणाम था। गोत्र दो प्रकार के है।

(१) उच्चगोत्र (२) नीचगोत्र

उच्चगोत्र के प्रभाव से उच्च सम्मानीय कुल में जन्म होता है। जीवन में मान सम्मान जन्म के आधार पर मिलता है।

नीच गोत्र के कारण तुच्छ कुल में जन्म होता है। तिरस्कार, अपमान मिलता है। स्वभाविक भाव से लोग तिरस्कार करते हैं। महाभारत का एक महान योद्धा कर्ण कौरव-पाण्डवों में महत्वपूर्ण स्थान रखता था। कुन्ती के गर्भ में जन्म लिया था। क्षत्रिय पुत्र था पर सारथी के घर पालन-पोषण पाने के कारण नीच कहलायें।

एक कौवा कितना ही अच्छा क्यों न हो फिर भी घृणित हैं और एक तोता देखने में अच्छा न भी हो तो भी प्रिय होता है। ये भी गोत्र कर्म का कारण है।

निम्नोक्त कारणों से नीच गोत्र कर्म का बन्धन होता है।–

(१) **जाति मद** – जाति का गर्व, स्वयं की जाति अच्छी, उच्च, सम्मानीय का अभिमान करने पर नीच गोत्र कर्म बन्ध होता है।

(२) **कुल मद**– मातृ पक्ष को जाति और पितृपक्ष को कु ल कहा जाता है। कुल का अहंकार करने से नीचगोत्र कर्म का बन्ध लेता है। भगवान महावीर कुलमद के कारण नीचगोत्र कर्म का बन्ध किये थे।

(३) **अन्य की निन्दा** – अन्य व्यक्ति का दोष देखना। निन्दा-टीका, आलोचना कर। अन्य को नीचा दिखाने का भरसक प्रयत्न करना।

(४) **स्व प्रशंसा** – स्वयं का गुण बड़ा चढ़ा कर प्रचार करना।

(५) **धर्मी का मजाक** – धर्म करने वाले सत्व्यक्ति का उपहास मजाक, बेइज्जति करना।

(६) **दुर्गंच्छा** – साधु–साध्वी का मलिन वेश, दीन-दुःखी असहाय को देखकर, धिक्कारना थू-थू करना, अपमान करना।

इस प्रकार की निम्नस्तरीय मनोवृत्ति के कारण जीवात्मा नीचगोत्र कर्म का बन्ध करता है।

निम्नोक्त कारण से उच्च गोत्र का उपार्जन होता है।

(क) **देवगुरू की भक्ति** –परमतारक परमात्मा और उनकी आज्ञानुसार उनके मार्ग पर चलने वाले गुरुदेवों की सेवा, भक्ति।

(ख) **विनय वैयावच्च**– देव, गुरु, धर्म की सेवा, वैयावच्च, अपनी योग्यतानुसार व्यवहार।

(ग) **पढ़ना-पढ़ाना** – स्वयं धर्म शास्त्र, सत् शास्त्र पढ़ना अन्य को पढ़ने या पढ़ाने के लिये शक्ति अनुसार सहयोग करना।

(घ) **प्रायश्चित**– गलती हो जाने पर परम गुरु के पास स्वच्छ मन से अपनी सभी भूलो को प्रकाश करने उनका दिया हुआ प्रायश्चित पूर्ण करना। भविष्य में इस प्रकार पुनः गलती न हो जाय इसके लिये सावधानी पूर्वक आचरण करना।

(८) **अन्तराय कर्म**– वस्तु या शक्ति उपस्थित होने पर भी कार्यरूप में परिणत करने में जो बाधक हो उससे अन्तराय कर्म कहते है।

एक व्यक्ति दिन भर कठोर परिश्रम करने पर भी पेट भरने लायक धन उपार्जन करने में असमर्थ रहता है और एक व्यक्ति अल्प परिश्रम में ही आवश्यकता से अधिक धन प्राप्त कर लेता है।

एक व्यक्ति के पास पर्याप्त धन है पर परिस्थिति वश काम में ले नहीं सकते हैं।

उपरोक्त ये सभी अन्तराय कर्म का परिणाम है।

क्रमशः

मलयासुन्दरी चरित्र

इधर राजपुरुषों ने मलयासुन्दरी के महल में प्रवेश किया और उसका स्वाभाविक रूप देखकर वे आपस में बोलने लगे – अरे! हमारे भय से इसने कितनी जल्दी अपने राक्षसी रूप को त्याग कर कैसा सुन्दर रूप बना लिया!

दूसरा बोला– कुछ भी हो महाराज की आज्ञा होने से हम इसे छोड़ नहीं सकते।

तिरस्कार के शब्दों से वे मलयासुन्दरी को बोले – अरे पापिनी! अभी तक तू कितने मनुष्यों का संहार करेगी? अरे भाई? देखते क्या हो?

इसे पकड़ कर बांध लो! यों कह कर राजपुरुषों ने मलयासुन्दरी को पकड़ कर मजबूत बन्धनों से बांध लिया और उसे महल से बाहर ले आये। राजा ने पहले से ही द्वार पर रथ तैयार रखाया था। मलयासुन्दरी को उसमें बैठा कर शीघ्रता के साथ उस रथ को भयंकर अटबी की तरफ ले गये।

इस आकस्मिक घटना से मलया सुन्दरी एकदम स्तब्ध हो गयी। उसने सोचा – मैंने क्या अपराध किया है? कि जिससे ये राजपुरुष मेरा तिरस्कार कर रहे हैं? हाय मालूम होता है; किसी कारण ये मुझे मारने के लिये या कहीं भयानक जंगल में छोड़ आने के लिये ले जा रहे हैं! हाय कर्म की कैसी विचित्र गति है!! मेरे सामने कोई नजर भर के भी नहीं देख सकता था। परन्तु आज एक पतिदेव के अभाव में मुझ पर कितना भयंकर जुल्म किया जा रहा है। न मालूम इसका क्या कारण होगा? मैंने राजा का ऐसा क्या अपराध किया होगा? या मेरा पुण्य पूर्ण होने पर किसी पूर्व जन्म के अशुभ कर्म का फिर से उदय हुआ है। मनुष्य को मालूम नहीं होता, क्लिष्ट कर्मों के विपाक का किस वक्त उदय होगा? हे हृदय! अब तू इन दुःखों को सहने के लिये फिर से वज्र के समान कठिन बन जा। मन को धीरज देकर वह महाबल के बतलाये हुये श्लोक का स्मरण करने लगी।

सती मलयासुन्दरी सहित रथ को लेकर राजपुरुष उस भयानक अटवी में जो कि मनुष्यों से रहित और हिंसक पशुओं से व्याप्त थी, वहां पर आ पहुँचे। उसे रथ से नीचे उतारा गया। उसका सुन्दर राजतेज और करुणा पैदा करने वाली सौम्य मुखमुद्रा तथा उसके कमल के समान नेत्रों से मोतियों के जैसे टपकते हुए अश्रुबिन्दु देखकर उनमें से एक क्षत्रिय राजपुरुष का हृदय द्रवित हो उठा। वह अन्य सुभटों से बोला– भाइयों! किसी भी कारण से राजा ने इस भद्राकृतिवाली स्त्री को राक्षसी समझ कर हमें इसके वध की आज्ञा दी है; परन्तु इस स्त्री की करुणाजनक मुखाकृति देखकर मुझे यह सर्वथा निर्दोष मालूम होती है। ऐसी निर्दोष अबला पर शस्त्र चलाना वीरपुरुषों के लिए बिलकुल अनुचित है। ऐसी औरत पर हाथ उठाना यह महानिर्दयता वाले कर्म चांडाल का काम है। पहले जन्म में किये हुए अशुभ कर्मों के कारण हम यहां दूसरे के सेवक बने हैं फिर इस निर्दोष स्त्री की हत्या कर न जाने कैसी नीच गति को प्राप्त होंगे! इसलिए हमें चाहिए कि इस स्त्री की हत्या अपने सिर पर न लेकर हिंसक पशुओं से परिपूर्ण इस अटवी में इसे जिन्दा छोड़ जाये। किसी हिंसक प्राणी का शिकार बन कर यह स्वयं अपने प्राणों को त्याग देगी और हम इस पाप से बच जायेंगे। वे परस्पर ऐसा विचार कर मलयासुन्दरी को जीवित ही उस निर्जन जंगल में छोड़ वापिस लौट आये। उन्होंने राजा से आकर कह दिया–महाराज! आपकी आज्ञानुसार हम उस स्त्री को निर्जन जंगल में मार आये हैं।

यह सुन राजा बड़ा खुश हुआ और विचारने लगा कि उस राक्षसी के मर जाने से अब नगर की सारी बीमारी खुद बखुद शान्त हो जावेगी। अब कनकवती को खुश करने के लिए राजा ने नगर में उसकी तलाश कराई परन्तु उसका कहीं पर भी पता न लगा। राजकुमार का महल सूना रहने के कारण राजा ने तमाम दरवाजों पर ताले लगवा कर उन पर सील लगवा दी।

कनकवती का प्रपंच प्रकट-दुःखी महाबल–

महाबल की सेना विजय के गर्व से आनन्द मनाती लौट रही है। उसके सैनिकों को अपनी-२ वीरता पर गर्व के साथ पूर्ण विश्वास हो रहा था। यों तो महाबल के सैनिकों में सभी तलवार के धणी थे। बात पर

जान देने वाले, उसके इशारे पर आग में कूदने वाले, उसकी आज्ञा पाकर एकबार आकाश के तारों को तोड़ने वाले थे। किन्तु युद्ध कुशलता में महाबल सब से बढ़ा हुआ था। वह अन्य वीरों की भांति अक्खड़, मुँहफट या घमंडी न था। और लोग तो अपनी वीरता को खूब बढ़ा बढ़ा कर कथन करते थे। आत्मप्रशंसा करते हुए उनकी जबान न रुकती थी। महाबल जो कुछ करता था वह शान्त भाव से और विचार शीलता से ही करता था अपनी प्रशंसा करना तो दूर रहा-वह चाहे किसी शेर को ही क्यों न मार आया हो उसकी चर्चा तक न करता था। उसकी विनयशीलता और नम्रता अपनी सीमा से भी अधिक बढ़ी हुई थी। और लोग समर में रात्रि के समय मीठी नींद सोते थे परन्तु महाबल तारे गिन-गिन कर रात काटता था। क्योंकि वह शरीर से समर भूमि में आया था, परन्तु उसका हृदय अपनी प्राण प्यारी मलया के पास ही रह गया था वह मलयासुन्दरी को शीघ्र जा मिलने की उत्सुकता से विलम्ब रहित प्रयाण कर पृथ्वीस्थानपुर के समीप ही आ पहुँचा। रास्ते में कई जगह उसे अपशकुन भी हुए, बांई आँख भी फड़की, परन्तु विजय की खुशीं और प्रिया से मिलने की उत्सुकता में उसने उस ओर कुछ ध्यान ही न दिया। वे सब राजनगर में आ पहुँचे। राजसभा में आकर महाबल ने पिता के चरणों में नमस्कार कर विजय का समाचार सुनाया।

पल्ली-पति को जीतने का समाचार सुन कर राजा को बड़ा भारी हर्ष हुआ, और उसने कुमार की प्रशंसा की। पिता की आज्ञा ले मलयासुन्दरी से मिलने की उत्कंठा में कुमार अपने महल की तरफ चल पड़ा, परन्तु तुरन्त ही रोक कर महाराज शूरपाल ने उसका हाथ पकड़ एकान्त में ले जाकर मलयासुन्दरी के राक्षसी होने का तथा उसे दी हुई शिक्षा का सर्व वृत्तान्त कह सुनाया।

पिता के मुख से यह वृत्तान्त सुनते ही दीर्घ निश्वास के साथ-हाथ से हाथ घिसते हुए कुमार के मुख से एकदम चीत्कार शब्द निकल पड़ा। वह रुद्ध कंठ से बोला—हा! हा! पिताजी! आपने महान् अनर्थ कर डाला। उसके प्राणों के साथ आपने मेरे भी प्राण ले लिये। आपने मुझे और अपनी पुत्रवधू को शत्रु से भी बढ़ कर असह्य दंड और अन्याय किया है। मलयासुन्दरी राक्षसी थी, यह भ्रमता आपको कहाँ से पैदा हुई? पिताजी!

आपकी इतनी विचारशून्यता! आपकी दीर्घ दृष्टि कहाँ चली गई? यदि आपको उसमें कोई दोष मालूम हुआ भी था तथापि मेरे आने तक तो धैर्य रखना था। जिस छिन्न नासिका स्त्री के कहने से आपने मुझ पर यह अनर्थ ढाया है उस कपट की खान कनकवती को मैं भलीभाँति जानता हूँ। पिताजी! आप उस धूर्त स्त्री के बचनों से सचमुच ही ठगे गये। आप मुझे जल्दी बतलाइए कि वह मेरी निष्कारण दुश्मन नकटी कहां पर हैं? मैं तमाम बातें पूछूं तो सही! कुमार के इस प्रकार के दुःख, शोक और तिरस्कार पूर्ण वचनों से राजा शूरपाल का मुख मंडल मुरझा गया। उसने नीचे देखते हुए कहा—बेटा! इस घटना के बाद हमने उसकी सब जगह तलाश की परन्तु वह नकरी कहीं पर भी देखने में न आयी। अगर सच ही यह उसका प्रपंच होगा तो शायद वही उसी रात को कहीं अन्यत्र भाग गई होगी।

महाबल— पिताजी! उस पापिनी के असत्य वचनों से प्रेरित हो आपने व्यर्थ ही अपने निर्मल कुल में कलंक लगाया है; इतना ही नहीं परन्तु आपने अपने वंश का विच्छेद भी किया है।

इस प्रकार बोलता हुआ पत्नी के वियोग से दुःखित राजकुमार उदासीनता धारण किये अपने महल की तरफ चल पड़ा। पुत्र के दुःख से दुःखित हो राजा भी कुमार के पीछे-पीछे उसके महल में आया और दरवाजों पर लगे हुए सील तोड़कर ताले खोल दिये। एक जगह की तरफ दृष्टि कर राजा बोला—देखो बेटा! इस जगह तुम्हारी प्रिया मलयासुन्दरी राक्षसी के रूप में नग्न होकर नाचती, कूदती अनेक प्रकार के फूत्कार करती हुई मैंने कई सुभटों के साथ बहुत देर तक उस सामने वाले मकान पर से देखी थी। इसलिये उसे शिक्षा करने में मेरा अपराध ही क्या है? यदि शरीर का कोई अंगउपांग गल जाय तो क्या उसे नहीं कटवा दिया जाता? कुमार मन ही मन विचारने लगा ठीक है अब अधिक बोलने की कोई कीमत नहीं। अगर वह जिन्दा मिल गई तो तमाम बातें मालूम हो जायेंगी, इत्यादि विचार करते हुये वह अपने मकान में रखी हुई सारी वस्तुयें देखने लगा।

क्रम से उस सन्दूक का ताला खोलने पर बिलकुल नग्न राक्षसी के रूप में क्षुधा से दुर्बल हुई वह छिन्न नासिका कनकवती सन्दूक में पड़ी नजर आई। उसे देखते ही राजा आदि सब ही स्तब्ध हो गये। महाबल जोश में आकर बोल उठा पिताजी! राक्षसी के रूप में नाच करती हुई आपने उस रात में इसी स्त्री को देखा था?

यों कह कुमार ने उस स्त्री का हाथ पकड़ कर उसे सन्दूक से बाहर निकाला। जब उस पर निष्ठुरता पूर्वक कुमार ने ठोकरों की मार शुरू की तब उसने काँपते हुये अपना तमाम प्रपंच प्रगट कर दिया। अब अविचारित किये हुए कार्य का राजा को महान पश्चाताप करना पड़ा। सचमुच ही ऐसे उलझन भरे प्रसंगों में ही बुद्धिमानों की बुद्धिमत्ता, धैर्यवानों की धीरता, विवेकी पुरुषों की विवेकिता दूरदर्शित और विचार शीलता का निर्णय होता है।

राजा के पश्चाताप और गुस्से की हद न थी। वह इस कार्य से लोगों में मुख दिखाने लायक भी अपने आप को न समझता था। इसलिये छिन्न-नासिका कनकवती को उसने तुरन्त ही देश-निकाले की शिक्षा दी। परन्तु इससे महाबल की दुःखित आत्मा को क्या शान्ति मिल सकती थी? पूरे दिन की गर्भवती और निर्दोष पत्नी के ऐसे अनिष्ट भविष्य से महाबल के शोक का या दुःख का पार न रहा, उसका हृदय पराधीन बन गया। उसने मनको मसोस कर किसी से बोलने तथा भोजन करने का त्याग कर दिया। उनके नेत्रों से रह रह कर सावन भादों के वर्षा की भाँति आंसुओं की झड़ी लग गई। विशेष क्या कहें वह अपनी निर्दोष प्रिया के वियोग से फकीर बन कर मरने के लिये तैयार हो गया सचमुच ही मोह के उदय में मनुष्यों के अंतर नेत्रों पर परदा पड़ जाता है। राजकुमार को मृत्यु के लिये उत्सुक देख राजा और रानी भी वैसी ही दुःखद अवस्था अनुभव करने लगे। इस समय राजकुल में ही नहीं बल्कि सारे नगर में शोक और उदासीनता का साम्राज्य छाया हुआ था, दीर्घ निश्वास के सिवा किसी के मुँह से और कोई शब्द न निकलता था।

दैव वशात् इस समय कहीं से फिरता हुआ वहां पर एक निमित्तज्ञ पुरुष आ पहुँचा। मालूम होने से उसे राज-सभा में बुलाया गया। उसके हाथ में एक अष्टांग निमित्त की पुस्तक थी। प्रधान मंत्री ने उसका आदर सत्कार कर उसे उचित आसन पर बिठाया।

प्रधान–निमित्तज्ञ महाशय! महाबल कुमार की पत्नी मलयासुन्दरी निर्दोष होने पर भी एक स्त्री के प्रपंच से निकाल दी गई है। इसी कारण आज हम उसके वियोग से दुःखित हो शोक सागर में डूब रहे हैं। इसका परिणाम हमें बहुत भयंकर मालूम होता है। इसलिये आपके निमित्त बल से आप यह बतला सकते हैं? कि महाबल कुमार की पत्नी किसी जगह जीवित है या नहीं? बतला सकते हों तो बतला कर हम पर उपकार करें।

प्रश्नकुण्डली बना कर और उसे अच्छी तरह देख निमित्तज्ञ बोला- महाशयजी! राजकुमार की पत्नी जीवित है, और वह एक वर्ष के बाद कुमार को अवश्य मिलेगी। मलयासुन्दरी जीवित है, यह अमृत के समान वचन सुनकर पुनर्जन्मसा प्राप्त कर, कुमार एकदम बोल उठा–पण्डितजी! विलंब न कीजिये, आप मुझे कृपया शीघ्र बतलाइयें कि वह इस समय कहाँ पर है?

निमित्तज्ञ–कुमार ! आपकी पत्नी जंगल में है या बस्ती में, दुःख में है या सुख में, इत्यादि विस्तारवाली बातें, मैं नहीं जान सकता। तथापि यह मैं निश्चित रूप से कह सकता हूं कि वह सुन्दरी जीवित है, और उसकी आयुष्य आपसे लम्बी है। यह बात सुनकर राजा के मन में शक पैदा हुआ कि उसे निर्जन अटवी में भेजकर मरवा डाला है तब फिर वह जीवित किस तरह रह सकती है? इस बात का निर्णय करने के लिये उसने फौरन सुभटों को बुलवाया जिनके हवाले मारने के लिये किया था। राजा–सुभटों! मैं तुम्हें यह बात पूछने से पहले अभयदान देता हूं, सच बोलो, मैंने तुम्हें मलयासुन्दरी को अटवी में ले जाकर मार डालने का आदेश दिया था। क्या तुमने सचमुच उसे ले जाकर मार डाला था?

सुभट– महाराज! हम सच कहते हैं, आपकी आज्ञा पाकर, जब हम उसे रथ में बैठा कर, उस निर्जन अटवी में ले गये तब प्रातःकाल हो गया था। हमने उसे रथ से नीचे उतारा, उस समय उसका शरीर भय से काँप रहा था, आँखों से आँसू बह रहे थे। हमने उसकी सौम्य मुखमुद्रा को देख कर विचार किया कि महाराज को उसके राक्षसी होने का किसी ने योंही भ्रम डाल दिया है। ऐसी सुन्दर आकृति और सुलक्षणों वाली स्त्री कदापि राक्षसी नहीं हो सकती । इसलिए महाराज की आज्ञानुसार यदि हम इसका वध करेंगे, तो हमें निष्कारण ही दो प्राणियों

की हत्या का पाप लगेगा। अतः यह समझ कर इस हिंसक पशुओं वाली अटवी में आप ही यह किसी हिंसक पशु का शिकार बन जायेगी, उसे जंगल में छोड़कर हम वापिस चले आये, और हमने आपके समक्ष आकर भय से आपको उसके मारने का असत्य समाचार दिया।

राजा– (दीर्घ निश्वास ले पश्चात्ताप पूर्वक) अहो! इस नौकरों में जो दया और बुद्धिमत्ता है उतनी भी दया और बुद्धिमत्ता मुझमें नहीं! धन्य है ऐसे दयालु और विचारशील मनुष्यों को मेरे जैसे विचारहीन एवंदया हीन मनुष्यों को धिक्कार है।

उन लोगों की प्रशंसा कर राजा ने सुभटों और निमित्तज्ञों को बहुत सा धन देकर उनका आदर सत्कार किया।

कुमार बोला– ज्ञानी महाशय! आपका कहना बिलकुल सच है, सुभटों ने भी उसे जीवित छोड़ दिया है। (फिर पिता की तरफ देख) पिताजी! जिस जगह सुभटों ने उसे जंगल में छोड़ दिया था, वहां जाकर तलाश तो करें। राजपुरुषों को भेज कर चंद्रावती में भी खबर तो करायें, न जाने हमारे पुण्योदय से वह किसी तरह अपने पिता के वहां पहुँच गई हो। कुमार के कहने से राजा ने जगह-जगह राजपुरुषों को भेजकर मलयासुन्दरी की शोध कराना शुरु कर दिया। राजाने कुमार को समझा बुझाकर भोजन कराया और खुद ने भी भोजन किया।

मलयासुन्दरी कीं खोज में भेजे हुए राजपुरुष कुछ समय के बाद जहाँ तहां ढूढकर वापिस आने लगे उसके न मिलने का समाचार देने लगे। उनकेसमाचारों से कुमार की आशा निराशा में परिवर्तित हो गई। वह अपनी प्रिया के सम्बन्ध में नाना प्रकार की कल्पनायें करने लगा। युद्ध में जाते समय प्रेम भरे शब्दों से साथ चलने की उसकी प्रार्थना को याद कर विशेष दुःखित होने लगा। वह मन ही मन उसे प्रत्यक्ष समझ कर कहने लगा–प्यारी! राजमहल के उत्तम सुख का थोड़ा सा अनुभव कर अब तुम दुःख के अगाध समुद्र में जा पड़ी। प्रिये! ऐसे घोर दुःखों का अनुभव तू किस तरह करती होगी? तूने मेरे साथ आने के लिये बहुत हठ किया, मगर मैंने तुझे साथ न लिया। अब तूं कहां और मैं कहां? सुन्दरी राजपत्नी होकर भी आज तूं जंगल में मारी-मारी फिरती होगी। हिरणों के टोले से अलग पड़ी हुई हिरणी की तरह वन में तूं अकेली इधर उधर

भ्रमण करती होगी। अरे तुझे निराधार अकेली घूमती हुई देख कर कोई दुष्ट मनुष्य उठा ले गया होगा। अथवा जंगली जानवरों ने तुझे मार दिया होगा। अथवा मेरे वियोग के दुःख से एवं जंगल की भयंकरता देखकर तेरा हृदय फटगया होगा हाय! इस भयंकर दुःख को मैं कैसे सह सकूंगा। इत्यादि विलाप करता हुआ कुमार तीक्ष्ण शल्य से विह्वल बन गया। मलयासुन्दरी की बैठक, रतिघर, उसके वस्त्र आभूषण अलंकार आदि देख देखकर महाबल की आखों से अश्रुधारा छूटने लगी। मन में अत्यधिक बेचैनी होने लगी। बार-बार मलयासुन्दरी का स्मरण होने लगा। जिस महल में गांधर्व के गायन, वारंगना के नृत्य सारंगी का झणभ णाट और मृदंगों के मधुर-नाद गूंजते थे आज वही महल खाने को दौड़ता था, शून्याकार और भयंकर मालूम पड़ता था। महाबल को यह महल श्मशान जैसा दिखता था।

अरे जो मनुष्य मलया की तलाश करने के लिये गये थे, वे भी इधर-उधर फिरकर वापिस आ गये। उनको क्या गर्ज कि वे कष्ट उठाकर भी कहीं से मलया का पता लगावें, मलया के लिये जो दुःख दर्द मुझे है वह दूसरों को कैसे होगा?

इन्हीं विचारों से महाबल को किसी भी जगह चैन नहीं पड़ती थी। सूक्ष्म ज्वर वाले रोगी के समान अपनी प्रिया के वियोग से उसे खाना पीना बिलकुल अच्छा न लगता था।

उसने निरुपाय होकर एक रोज यह निश्चय किया कि जब उस अष्टांग निमितज्ञ ज्ञानी ने यह बतलाया है कि एक वर्ष के बाद वह मुझे जीवित मिलेगी। तब मुझे स्वयं क्यों न तलाश करनी चाहिये? उसके वगैर मेरा अब यहां पर क्या रक्खा है? यदि वह एक वर्ष पर्यन्त ढूँढने पर भी न मिली तो मुझे यहाँ न आकर स्वयं भी उसके वियोग में प्राण त्याग कर देना चाहिये।

यह निश्चय कर एक रोज रात के समय किसी को मालूम न हो इस प्रकार हाथ में तलवार ले वह अपने शहर से निकल गया। अब वह भयानक जंगलों में बस्ती, और ग्रामों में मलयासुन्दरी की खोज करता हुआ, भूख-प्यास सहन कर, निद्रा को त्याग कर भिखारी के समान फिरने लगा।

इधर प्रातःकाल होने पर जब ढूँढने से भी राजकुमार का पता न लगा तब राजा के दुःख का पार न रहा। वह समझ तो गया कि अपनी प्रिया के वियोग से कुमार यहां पर न रह सका। उसकी खोज के लिये ही वह रात में एकाकी चला गया मालूम होता है। अभीतक महाराज शूरपाल को एक ही चिन्ता थी किन्तु कुमार के जाने से उनपर डबल चिन्ता का भार आ पड़ा। उसने दोनों की तलाश में चारों तरफ लोगों को भेजा।

जंगल में पुत्र जन्म

सूर्य निकल आया, वैसा ही जैसा चमकीला और सूर्ख रंग का हमेशा निकला करता है। आसमान भी वैसा ही नीला है। जंगल के दरख्तों का वैसा ही नीला रंग दीख पड़ रहा है, सब कुछ वैसा ही है, जैसा कि मैं बचपन से देखती आ रही हूँ। परन्तु दुर्भाग्यवश खुद मैं ही वह नहीं हूँ जो कल थी। यह मैं जानती हूँ कि बदनसीबी अकेली ही नहीं आती, किन्तु अपने साथ और भी नई-नई आफतों को ले आती है। जब संकटों का सिलसिला शुरू हुआ है तब यह अपना पूरा जोर दिखाये बिना न रहेगा। हतभाग्य मलयासुन्दरी! अब तू आने वाले इन तमाम संकटों का सामना करने और निर्वासित जीवन बिताने के लिये कठिन हृदय बनजा। राजा और राजपुरुषों को इसमें क्या दोष है! मेरे अशुभ कर्म उदय होने पर वे सब निमित्त बन गये हैं। परन्तु मेरे हृदय में यह बात अधिक खटकती है की मुझे मेरे बुद्धिमान् श्वसुर ने किस अपराध में निर्वासित किया है? इस प्रकार का अविचारित कार्य करने के लिये उन्हें अवश्य ही महान् पश्चाताप होगा।

हे नाथ! आपतो मेरे सुख के लिये ही मुझे घर छोड़ गये थे। परन्तु आप के बिना मेरे नसीब में सुख कहाँ है? जब आपके स्नेही हृदय को कितना दुःख होगा! प्यारे! क्या इस जीवन में मुझे फिरसे आपका समागम हो सकेगा? हां! मैंने जो कुछ भी अपने सुख के लिए किया था, वह सब कुछ उलटा हो गया।

चारों तरफ सन्नाटा देख अब वह कुछ जागृत सी हुई। उसने रोने धोने से अपनी आंखे सुजा ली थीं; परन्तु रुदन और चिंता का कुछ भी अच्छा परिणाम न देख उसने स्वयं अपने आप को शिक्षा दी। संध्या के समय विलाप और चिंता के कारण उसके गर्भपूर्ण उदर में पीड़ा होने

लगी। कुछ देर वेदना सहकर जिस तरह प्रातः काल में पूर्व दिशा सूर्य को जन्म देती, उसी तरह उसने तेजस्वी पुत्र रत्न को जन्म दिया।

जिस राजरमणी के पास अनेक दास-दासी हाजिर रहते थे। जिसका प्रसूतीकर्म गगनचुम्बी राजमहलों में प्रसूति करानेवाली कुशल दाइयों की देख-रेख में होना था और जिसे ऐसे प्रसंग में अनेक प्रकार वस्तुओं की आवश्यकता थी वह राजरमणी भाग्य चक्र में पड़कर निर्वासित हो आज एक भिखारिन के समान जंगली पशुओं की स्थिति में रहकर पुत्र को जन्म देती है। इस समय उसे ब्राह्य और आभ्यन्तर कितना दुःख हुआ होगा यह तो कोई ज्ञानी जानते हैं या वह स्वयं ही जानती थी।

ऐसी दुःखद स्थिति में भी पुत्र प्राप्ति ने उसे आश्वासन दिया। बच्चे को साफ सूफ कर गोद में बैठाकर माता मलया प्रेम भरी दृष्टि से उसके मुख की तरफ एकटक देखने लगी। इस समय वह अपने ऊपर पड़े हुए तमाम दुःखों को भूल गई। उस पुत्र की मुख मुद्रा सूर्य बिम्ब के समान तेजस्वी और सुन्दर देखकर माता के नेत्रों से हर्ष के अश्रु बहने लगे।

वह अपनी स्थिति को याद करके पुत्र के सन्मुख देख कर कहने लगी –हे पुत्र! आज हजारों मनोरथों के साथ तेरा जन्म हुआ है, परन्तु तेरी हतभाग्य-माता ऐसे भयंकर अरण्य में तेरा क्या जन्मोत्सव कर सकती है? यदि तेरा जन्म घर पर हुआ होता तो आज के दिन राज्य भर में महोत्सव मनाया जाता। घर-घर मंगल गाये जाते। बेटा! मुझ कमनसीब स्त्री के तमाम मनोरथ मनमें ही बिलीन हो गये। यों बोलते हुए फिर से उसका हृदय भर आया और वह फूट-फूट कर रोने लगी। अरण्यवासी हिंसक पशुओं के भय से सावधान रह कर उसने बड़ी मुश्किल से रात बिताई।

मनुष्य की दुःखित अवस्था में सुकुमार शारीरिक परिस्थिति भी कठोरता धारण कर लेती है, एवं अधिक समय तक रहने वाला दुःख भी उसके हृदय में घर कर लेता है। राज पुत्री होने के कारण धैर्य और साहस धारण कर वह वहां से पूर्व दिशा की ओर चल पड़ी। कुछ दूर जाने पर उसे एक नदी बहती हुई नजर आई। नदी पर जाकर उसने अपनी तमाम अशुचि को दूर कर पास में रहे वृक्षों की सघन घटा घिरी हुई थी; उन वृक्षों के एक निकुंज में रहकर मलयासुन्दरी अपने पुत्र का पालन करती हुई अपने निर्वासित जीवन के दिन बिताने लगी।

पुत्र हरण सती की कसोटी

एक दिन बहुत से परिवार सहित बलसार नामक सार्थवाहने उसी नदी के किनारे पर अपना पड़ाव डाला जहां दुर्दैव पीड़ित मलयासुन्दरी अपने संकटपूर्ण समय को बिता रही थी। संध्या के समय बलसार दिशा फराकत के लिए अपने तंबू से निकला। जब यह दिशा जाकर उस घनी-वृक्ष घटा के पास से वापिस लौटा तब उसने वहां पर एक बच्चे के रोने की आवाज सुनी।

इससे उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। वह सोचने लगा ऐसे भयंकर जंगल में छोटे बच्चे की आवाज कहां से आ रही है? बच्चे के शब्दानुसार जाकर उसने वनदेवी के समान पुत्र को गोद में लिये वृक्ष के निकुंज में बैठी हुई मलयासुन्दरी को देखा। वह चकित हो साहस कर पूछने लगा-भद्रे! तुम कौन हो? ऐसे जंगल में अकेली क्यों बैठी हो? तुम्हारी मुखाकृति से मालुम होता है कि तुम किसी उत्तम कुल में जन्मी हो। मैं बलसार नामक सार्थवाह हूँ और सागरतिलक नामक शहर में रहता हूं। व्यापार के निमित्त प्रायः देश देशान्तरों में विशेष घूमता रहता हूँ। तुम मुझ से किसी तरह का संकोच मत करो। और इस नजदीक के पड़ाव में मेरे साथ मेरे तंबू में चलो।

मलयासुन्दरी की रूपराशि को देखकर बलसार का मन विचलित हो गया था। अतः उसका दुःख दूर करने के लिये नहीं किन्तु अपनी कामवासना से प्रेरित हो वह मलयासुन्दरी को अपने तंबू में लेजाना चाहता था।

बलसार का भाव मलयासुन्दरी समझ गई थी। अतः उसने उसे उत्तर दिया–श्रीमान! मैं एक चाँडाल की पुत्री हूँ। माता पिता के साथ क्लेश होने के कारण क्रोधावेश में आकर मैं यहाँ भाग आई हूँ। अब मैं वापिस अपने घर चली जाऊंगी। सार्थवाह भी इस बात को ताड़ गया कि इसकी बोलचाल मुखाकृति से सचमुच यह ऊंचे खानदान की स्त्री है। परन्तु किसी कारण वश यह अपने आपको छिपाती है। वह बोला – सुन्दरी! तुम मेरे साथ चलो। मैं तुम्हारा चांडालपन किसी के सामने प्रगट न करूंगा। और जैसे तुम कहोगी वैसे ही करूंगा।

इस तरह बोलता हुआ सार्थवाह मलयासुन्दरी के नजदीक आ पहुंचा और जिस तरह कोई लुटेरा किसी का धन छीन कर ले जाता है, वैसे ही वह मलयासुन्दरी की गोद से उसके बच्चे को उठा कर अपने पड़ाव की तरफ चल दिया।

मलयासुन्दरी एक आपत्ति पर दूसरी आपत्ति आई देख अधिक सावधान हो गई। उस महासती ने प्राणान्त कष्ट आने पर भी सदाचार से विचलित न होने के लिये अपने मन को खूब दृढ़ बना लिया। परन्तु पुत्र मोह से प्रेरित हो जैसे गाय अपने बछड़े के पीछे चली जाती है वैसे ही पुत्र को वापिस लेने के लिये दीनता भरे वचन बोलती हुई वह सार्थवाह के पीछे-पीछे चली गई।

मलयासुन्दरी को अपने पीछे आती देख सार्थवाह को बड़ी खुशी हुई। तंबू में जाने पर मलयासुन्दरी अपने बच्चे को वापिस लेने के लिये बहुत ही दीनता प्रकट की, परन्तु बलसार ने न तो उसे उसका पुत्र ही दिया और न ही उसे वहां से वापिस ही जाने दिया। पुत्र को पैदा हुए अभी आठ ही दिन हुए थे इसलिये स्तनपान न मिलने के कारण उसके मृत्यु की शंका मलयासुन्दरी भी पुत्र को छोड़ वापिस जाना उचित न समझी। पुत्र की रक्षा के लिये इच्छा न होने पर भी वह बलसार के पटावास में रह गई। बलसार ने किसी को मालूम न हो इस तरह उसके रहने का प्रबन्ध कर दिया और उसका दिल बहलाने के लिये उसके पास एक दासी भी नियुक्त कर दी। उसे विश्वास दिलाने के लिये सार्थवाह उचित वचनों से संबोधित करने लगा। अब वह अपने सार्थ के साथ मलयासुन्दरी को लेकर अपने सागर तिलक नामक शहर में आ पहुँचा। वहाँ आकर उसने एक गुप्त मकान में मलयासुन्दरी के रहने का प्रबन्ध किया। एक दिन बलसार मलयासुन्दरी के पास आकर नम्र शब्दों में बोला –सुन्दरी! तुम्हारा नाम तो बतलाओ। मलयासुन्दरी ने मंदस्वर में उत्तर दिया मेरा नाम मलयासुन्दरी है। यह नाम सुनकर उसके उच्च खानदान के विषय में जो उसका अनुमान था वह और भी दृढ़ हो गया। वह बोला–सुन्दरी! तुम मुझे अपना स्वामी स्वीकार करो तो मैं सदा के लिये तुम्हारा सेवक बनकर रहूँगा और मेरी इस अतुल संपत्ति का मालिक तुम और यह तुम्हारा पुत्र ही होगा; क्यों कि मेरे कोई सन्तान नहीं है।

मलयासुन्दरी–सार्थवाह! आप भी बड़े उच्च कुलीन मालूम होते हैं, इसलिये आप विचार करें कि पर स्त्री-गमन करना संसार में महान् पाप माना जाता है। उसमें भी सती स्त्री के सतीत्व पर हाथ डालना यह और भी अधिक घोर पाप गिना जाता है। आप जैसे कुलीन पुरुषों के लिये यह काम सर्वथा अनुचित है। तथापि मेरे सर्वस्व का नाश हो और शरीर के टुकड़े-टुकड़े हो जाने पर भी चन्द्रमा के समान निर्मल मैं अपने शील को कलंकित न करूँगी। बलसार ने अभी तक यह समझ रखा था कि स्त्री-जाति है, समझाने बुझाने से और खातिर तबज्जय करने पर खुद बखुद धीरे-धीरे रास्ते पर आ जायेगी। परन्तु मलयासुन्दरी के निश्चयात्मक वचन सुन उसके तमाम मनोरथों पर पानी फिर गया। अब उसके हृदय में मलयासुन्दरी पर प्रेम के बजाय क्रोध का रूप धारण कर लिया। उसने क्रोध में आकर फिर से उसके बच्चे को छीन लिया और उसे एक मकान में बन्द कर वह अपने घर चला गया।

घर पर अपनी प्रियसुन्दरी नामक स्त्री के पास जाकर बोला– प्रिये! आज मैं अशोक बगीचे में गया था वहां पर मुझे श्रेष्ठ लक्षणों वाला और सुन्दर रूपवान यह लड़का पड़ा हुआ मिला है। निःसंतान होने से हमें रात दिन पुत्र की चिंता रहती थी। आज हमें परमात्मा ने यह पुत्र दिया है। तुम बड़ी हिफाजत के साथ इसका पालन पोषण करो। निःसंतान प्रियसुन्दरी भी उस सुन्दर बालक को देख बड़ी खुश हुई। वलसार ने उसका नाम भी अपने नाम पर बल रक्खा और उसका पालन करने के लिये एक धाय भी रख दी।

सागरतिलक भी एक बड़े बन्दरगाह का शहर था। वहां पर कंदर्प नामक राजा राज्य करता था और व्यापारी लोग भी वहां पर बड़े धनाढ्य थे। उन बड़े व्यापारियों में से ही एक यह बलसार सार्थवाह भी था। बलसार में अति धनाढ्य अपने घर में एकत्रित कर लेने की लोभ की भावना सदैव जागृत रहती थी। इसलिये वह प्रायः व्यापार के निमित्त देश में ही अधिक फिरा करता था।

अब उसने व्यापार के निमित्त समुद्र मार्ग से बर्बरकूल जाने की तैयारी की। जहाज तैयार हो गये। मोहान्ध बलसार मलयासुन्दरी को बलात्कार अपने साथ ले लिया। समुद्रमार्ग में गमन करते हुए जहाज में

बैठी हुई मलयासुन्दरी के हृदय में अनेक प्रकार की भावनाएँ पैदा होने लगी। क्या यह दुराशय सार्थवाह मुझे समुद्र में डाल देगा? या परदेश में ले जा कर कहीं बेच देगा? खैर मेरा चाहे जो हो परन्तु इस दुष्ट के दुःख से दुःखित हो उसने फिर बलसार से पूछा—तुमने मेरे बच्चे को कहां रक्खा है? यह सुन वलसार ने फिर वही अपनी पुरानी चाहत प्रकट की। मलयासुन्दरी चुप हो रही।

पवन अनुकूल होने से बलसार सार्थवाह के जहाज थोड़े ही दिनों में बर्बरकूल जा पहुँचे। उसने अपना तमाम माल वहां पर काफी नफे से बेच डाला। मलयासुन्दरी से किसी तरह अपनी इच्छापूर्ण होती न देखकर उस दुष्ट ने उसे बहुत सा धन लेकर किसी रंग करने वाले निर्दय रंगरेज लोगों के हाथ बेच दिया। वहाँ पर भी उसे विषयवासना ने काम याचना के लिए बहुत ही समझाया बुझाया परन्तु उसकी मानसिक दृढ़ता को देखकर वह अपने कार्य में सफल न हुए। मलयासुन्दरी ने जब उनका कहना मंजूर न किया तब उन निर्दय युवक रंगरेजों ने उसके शरीर में सुइयां चुभोकर उसका रुधिर निकाला। इससे मलयासुन्दरी को असह्य वेदना के साथ मूर्छा आ गई। कुछ दिन के बाद जब उसके शरीर में फिर से रुधिर भर आया तब फिर उन्होंने पूर्व के समान ही उसके शरीर से खून को निकाला। इस तरह हमेंशा खून निकाल कर वे उस खून को कपड़े रंगने में प्रयोग करते थे। इस जगह मलयासुन्दरी को जो वेदनायें सहनी पड़ीं वैसे दुःख उसने कभी कानों से भी न सुने थे।

एक दिन उन लोगों ने फिर मलयासुन्दरी के शरीर से रुधिर निकाला, इससे मलयासुन्दरी असह्य वेदना के कारण मूर्च्छित हो मृतक की तरह जमीन पर पड़ी थी। उसका सारा शरीर रुधिर से सना हुआ था। उस समय उस घर के तमाम मनुष्य किसी एक प्रसंग से घर के अन्दर गये हुए थे। ठीक इसी समय आकाश मार्ग से अकस्मात् एक भारंड पक्षी वहां आ पहुँचा। वह पक्षी उस मकान के गृहांगण में अन्य कोई न होने से बेहोश पड़ी मलयासुन्दरी को माँस का लोथड़ा समझ कर उठा के ले गया।

भारंड पक्षी बहुत बड़े पंखो वाला होता है। सुना है कि उसमें हाथी को भी उठा ले जाने का सामर्थ्य होता है। वहीं भारंड पक्षी माँस पिंड की भ्रांति से मलयासुन्दरी को उठा ले गया। अब वह समुद्र पर से उड़ता हुआ किसी द्वीप की तरफ जा रहा था। रास्ते में सामने से आता हुआ एक भारंड पक्षी और मिल गया। उस माँस के लोथड़े को देख सामने आने वाले भारंड ने उस पर आक्रमण किया। दोनों की लड़ाई में मलयासुन्दरी उस भारंड के पंजों से निकल पड़ी, भारंड के पंजों से नीचे गिरती हुई को उसे कुछ ठंडी हवा लगने के कारण होशसा आ गया। अतः वह पंच परमेष्ठि-मंत्र का स्मरण करने लगी और स्मरण करते हुए ही वह समुद्र के अगाध जल में आ गिरी।

दुःख में वियोगी मिलन

दिन ढल चुका था। आज कुछ विशेष कार्य न होने से राजा कंदर्प ने अपने सभासदों से कहा, चलो भाई! आज बन्दरगाह की तरफ घूमने चलें। जी कहकर सभासदों ने उनकी आज्ञा को स्वीकार किया। घोड़े तैयार होकर आ गये। राजा कंदर्प अपने साथियों के साथ बंदरगाह की तरफ चल पड़ा।

बंदरगाह की ओर से घूमते हुए जब वे समुद्र के किनारे पूर्व की तरफ जा रहे थे तब उनमें से एक सवार बोल उठा। अहो! कैसा आश्चर्य है? समुद्र मार्ग से कोई मनुष्य मगराकार जानवर पर बैठा हुआ समुद्रतट की ओर आ रहा है। यह देख तमाम मनुष्यों का ध्यान उसी तरफ खिंच गया। कुछ नजदीक आने से मालूम हुआ कि कोई मनुष्य मगर-मच्छ पर सवार होकर पूर्ण वेग से आ रहा है। कंदर्प राजा सहित तमाम मनुष्य आश्चर्य के साथ मौन धारण कर, उसी तरफ देखते हुए खड़े रहे। उतने में समुद्र तट के पास आकर वह मच्छ ठहर गया। उसने अपनी पीठ पर बैठे हुए उस मनुष्य को अपनी सूंड से धीरे-धीरे भूमि पर उतार दिया। और उसे बारंबार देखता हुआ वह मच्छ वापिस समुद्र में चला गया।

क्रमशः

तित्थयर वर्ष २४
अप्रैल २००० से मार्च २००१

निबन्ध

क्र. सं.	लेखक	लेख	पृ. सं.
१.	श्रीमती लता बोथरा	श्रमण भगवान महावीर	३,५१,९९, १४६,१९५
२.	श्रीचन्द्र प्रभ	महावीर के वक्तव्य	९
३.	प्रौ. माधव श्रीधर रणदिवे सतारा	प्राकृत कथा साहित्य	६०
४.	डा. शिव प्रसाद सिंह	रुद्रपल्लीय गच्छ के इतिहास पर संक्षिप्त प्रकाश	६६, १०९
५.	श्री अमरेन्द्र कुमार सराक	सराक जाति का संक्षिप्त इतिहास	११८,१५४, २००,२४६, ३००
६.	श्री नरेन्द्रपत सिंह दुगड़	जैन धर्म की संक्षिप्त रूपरेखा	२२३,२६४
७.	श्रीमती लता बोथरा	प्रजातंत्र और महावीर	२४३,२९१, ३३९,३८७, ४३५
८.	श्री अमरचन्द एम ए.	हस्तिनापुर	३०८
९.	उपाध्याय अमर मुनिजी	भगवान् महावीर	३१३,३४८
१०.	पन्यास प्रवर श्री सुयश मुनिजी	कर्म की कहानी	३४६,३९३, ४४०,५२५
११.	श्री गणेश प्रसाद जैन	तीर्थंकर महावीर का निर्वाण पर्व दीपावली एक समीक्षा	
१२.	श्रीमती गायत्री कल्याण कांकरिया	बुज्झं ! बुज्झं किंन बुज्झहं	४००

कथानक

१३.		मलया सुन्दरी	२०,७४,१२५, १६८,२१४,२५५, ३०३,३५६,४०८, ४५८,५३९

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Calcutta-700 001
Ph: (O) 220-8105/2139,Resi; 329-0629/0319

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Calcutta-700 020
Ph: 247-6874,Resi: 244-3810

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
7, Camac Street, Calcutta - 700 017
Ph: 282-5234/0329

ARIHANT JEWELLERS
Mahendra Singh Nahata
57, Burtalla Street, Calcutta -700 007
Ph: 238-7015, 232-4087/4978

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box: 16127, Cal-17
Ph: (033) 240-3758/1690/3450/0514
Fax: (033) 240 0098, 2471833

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
13/4 Karaya Road, Calcutta - 700 019
Ph: (O) 2208967, (R) 2471750

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Calcutta - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Ph: (O) 235 0623, (R) 218-6823

VEEKEY ELECTRONICS
36, Dhandevi Khanna Road
Calcutta - 700 054
Ph: 352-8940/334-4140 (R) 352-8387/9885

SUDERA ENTERPRISES PVT. LTD.
1, Shakespeare Sarani, Calcutta - 700 071
Ph: 282-7615/761[illegible]/2726
Gram: Sudera

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H.M.T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Calcutta - 700 007
Phone: 239 7607

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Calcutta - 700 007
Ph: 238-8677/1647, 239-6097

ELECTRO PLASTIC PRODUCTS (P) LTD.
22, Rabindra Sarani, Calcutta - 700 073
Ph: 236-3028, 237-4039

IN THE MEMORY OF LATE
JITENDRA SINGH NAHAR
Rabindra Singh Nahar
40/4A, Chakraberia South, Calcutta - 700 020
Ph: (O) 244-1309, (R) 475-7458

SURAJ MAL TATER
C/o Surajmal Chandmal
137, Bipin Behari Ganguli Street
Calcutta - 700 012
Ph: Shop -227-1857 (R) 238-0026

MUSICAL FILMS (P) LTD.
9A, Explanade East
Calcutta - 700 069

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments & Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Calcutta - 700 007
Ph: (O) 238-4755, (R) 238-0817

APRAJITA
Air Conditioned Market
Calcutta - 700 071
Ph: 282-4649, Resi: 247-2670

MANI DHARITAR UDYOG
Manufactureres of Flexible Ribbon,
Hookup, Main Cards, P. V. C. Insulated Wires and Cables.
JHANWAR LAL JAIN
96, Old Roshan Pura, Najaf Garh
New Delhi - 110043, Ph:(O) 5016527
(R) 545 3415, 542 3304
Mobile: 9811075330,

ASHOKE KUMAR RAIDANI
6, Temple Street, Calcutta
Ph: 237 4132/236 2072

B. W. M. INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178,25778,25779
Fax: 05414-25378 (U. P.) 0151-61256 (Bikaner)

C. H. SPINNING & WEAVING MILLS PVT. LTD.
Bothra ka Chowk, Gangasahar, Bikaner

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue
Calcutta, Ph: 464-1186

BALURGHAT TRANSPORT LTD.
170/2/C, Acharya Jagadish Bose Road
Calcutta, Ph: 284-0612-15
2, Ram Lochan Mallick Street
Calcutta - 700 073

SURANA MOTORS PVT. LTD.
24A, Shakespeare Sarani
84 Parijat, 8th Floor, Calcutta - 700 071
Ph: 2477450/5264

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani
Calcutta - 700 007
Ph: Gaddy-233-1766/238-8846
Mobile: 98 3102 8566
Resi: 355-9641/7196

M/S. METROPOLITION BOOK COMPANY
93, Park Street, Calcutta - 700 016
Ph: 226-2418, Resi: 464-2783

APRAJITA BOYED
Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106
Ph: 665-3666/2272
Email : Suravee @cal2. vsnl. net in
sona @ cal3. vsnl. net in

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Calcutta - 700 001
Ph: (B) 220-2074/8958 (D) 220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2209755
Resi: 464-3235/1541, Fax: (033) 4640547

GRAPHITE INDIA LIMITED
Pioneers in Carbon/Graphite Industry
31, Chowranghee Road, Calcutta - 700016
Ph: 2264943, 292194, Fax: (033) 2457390

GRAPHIC PRINT & PACK
13A, Dacars Lane (Ground Floor) Calcutta - 69
Ph: 248-1533,248-0046

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Calcutta - 700 071
Ph: 282-8181

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment
15/1 Chakrabaria Lane
Calcutta - 700 026
Ph: 476-1533

**MOTILAL BENGANI
CHARITABLE TRUST**
12 India Exchange Place
Calcutta - 700 001, Ph: 220-9255

Dr. ANJULA BINAYIKA
M. D. DND, M. R. C. O. G. (London)
12, Prannath Pandit Street
Calcutta - 700 025, Ph: 474-8008

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
166, Jodhpur Park, Calcutta - 700068
Ph: 4720610

विशुद्ध केशर तथा मैसूर की सुगन्धित चन्दन की लकड़ी,
वरक एवं धूप के लिये पधारें
SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Calcutta - 700 007, Ph: 239-1408

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203/1, M. G. Road, Calcutta - 700 007
Ph: (O) 238-9356/0950
(Fact). 557-1697/7059

BALCHAND SOHANLAL
5, Karbala Mohammed Street
Calcutta - 700 001, Ph: 2353902/2759
Fax: 033-2353902

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazaar Street, Calcutta - 700 001
Ph: 248-5146/6941, Mobile: 9830032021
Fax: 91 (33) 2420588

BHANWARLAL KARNAWAT
BEEKY TAI FEB UDYOG PVT. LTD.
City Centre, Room No. 534 & 535, 5th Floor
16, Synagauge Street, Calcutta - 700 001
Ph: 238-7281, 230-1739

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Calcutta - 700 001
Ph: (O) 348 8576/0669/1242
Resi: 225 5514, 237 8208, 229 1783

GYANI RAM HARAK CHAND SARAOGI
CHARITABLE TRUST
P-8 Kalakar Street, Calcutta - 700 007
Ph: 239 6205/9727

SATKAR CONSTRUCTION PVT. LTD.
Gujrat Mansion, 5th Floor
14, Bentick Street, Calcutta - 700 001
Ph: 248-4730/6256/9867, Direct: 248-6477/6169
Resi: 478-0765/458-3397, Mobile: 98300-30618
Fax: 248-6169

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Calcutta - 700 001
Ph: 2352076, 2355701

DELUXE TRADING CORPORATION
Distinctive Printers
36, Indian Mirror Street
Calcutta - 700 013
Ph: 244-4436

R. K. KOTHARI
N. I. Corporation
Photographic, Heavy & Fine Chemicals
44c, Indian Mirror Street, Calcutta-700 013
Phone: 245-5763/64/65
D: 245-5766, Fax: 91-33-2446148

जो हिंसात्मक प्रवृति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

A. K. CHHAJER
Chhajer & Company
Chartered Accountants
230 A Masjid Moth
South Extension Part-II
New Delhi-110049

लाड़ा देवी ग्रन्थमाला
१२ सी, लार्ड सिन्हा रोड़
कलकत्ता - ७०० ०७१

उद्देश्य

अप्रकाशित, प्राचीन, दुर्लभ, ज्ञानवर्धक एवं जनोपयोगी साहित्य प्रकाशन संवर्धन एवं संयोजन

ग्रन्थमाला से प्रकाशित पुस्तकें

श्रवण बेलगोल इतिहास के परिपेक्ष्य में
निर्माल्य ग्रहण पाप है
तीर्थ मान चित्र
भक्तामर स्तोत्र
जैन प्रश्नोत्तर माला
जैन पूजा पाठ चौबीसी पूजा संग्रह
अक्षय विधि व्रत कथा एवं पूजा
(सुहाग दशमी पूजा)
सरल जैन विवाह विधि
भव पार चलोगे
भक्तामर स्तोत्र पूजा सहित
दीपावली पूजन
तमिलनाडू के जैन तीर्थ
दिव्य ज्योति
जैन व्रत विधि एवं कथा
तत्वार्थ सूत्र
मुझे सुखी होना है
(चिन्तन के कुछ क्षण)-
पंच स्त्रोत
समाधि तंत्र

श्री राजकुमार अभिषेक कुमार सेठी
कलकत्ता

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of puming stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in places where Columbus would have feared to tread)

Subhash Projects and Marketing Limited

MAN IN PARTNERSHIP WITHNATURE

Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Calcutta 700016 Ph:(033)245 7562. Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi 110 020 Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011)684 6003. Regional Office:8/2 Lisoor Road, Bangalore 560 042, Ph: (080)559 5508-15, Fax: (080) 559 5580.

Laying pipelines across one of the nation s driest regions, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreshwar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of paradip

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

BOTHRA SHIPPING SERVICES

2, CLIVE GHAT STREET,
(N. C. DUTTA SARANI)
2ND FLOOR, ROOM NO. 10,
CALCUTTA - 700 001
Fax No. 220-6400
Phone: 220-7162
Email : sccbss @ cal2. vsnl. net in

Steamer Agents, Handling Agents,
Commission Agents & Transport Contractors

शास्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
सारांश कि अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Calcutta - 700 071

Gram "GANGJUTMIL"
Fax: + 91-33-245-7591
Telex: 021-2101 GANG IN

Phone: 226-0881
226-0883
226-6283
226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 6346441/6446442
Fax: 6346287

भागवत पुराण के अनुसार
ऋषभदेव जैन धर्म के संस्थापक हैं।

Shri Radha Krishnan

HINDUSTAN GAS & INDUSTRIES LTD.
ESSEL MINING & INDUSTRIES LTD.

Registered Office
"Industry House"
10, Camac Street, Calcutta, 700 017
Telegram: 'Hindogen' Calcutta
Phone: (033) 242-8399/8330/5443

Manufacturers of
Engineers' Steel Files & Carbon Dioxide Gas
At Tangra (Calcutta)
Iron Ore and Manganese Ore Mines
In Orissa

S.G. Malleable & Heavy Duty Iron Castings
At Halol (Gujrat)
Ferro Vanadium and Ferro Molybdenum
At Vapi (Gujrat)
High Purity Nitrogen Gas
At Mangalore
H.D.P.E./P.P. Woven Sacks
At Jagdishpur (U.P.

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का है।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanksrit College, Calcutta

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.
(Formerly: Laxman Singh Jariwala)
Balwant Jain - Chairman

A - 42, Mayaputi, Phase-1, New Delhi-110064
Phone: 5144496,5131086,5132203
Fax: 91-011-5131184
E-mail: Laxman. jariwala @ gems. vsnl. net. in

"ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।"

KUSUM CHANACHUR

Founder: Late Sikhar Chand Churoria

Our Quality Product of Chanachur.
Anusandhan, Raja,
Rimghim, Picnic,
Subham, Bhaonagari Ghantia.

Manufactured By
M/s. K. C. C. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Pin-742122
Dist: Murshidabad
Phone: Code: 03483 No. : 53232
Cal. Phone: No.: 033 2300432, 5213863

With Best Compliments.....

MARSON'S LTD

MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO MANUFACTURE 132 KV CLASS TRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence,
Coal India, CESC, Railways,
Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short
Circuit test for Proven desing time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer
From 25 KVA to 50 MVA upto 132kv level.

Current Transformer upto 66kv.

Dry type Transformer.

Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, CALCUTTA - 700 016
PHONE: 229-7346/4553/226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-225948/2263236

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS
P-25 Kalakar Street, Calcutta - 700 007

English:

1. Bhagavati-sutra-Taxt edited with English translation by K. C. Lalwani in 4 volumes:
   - Vol - 1 (satakas 1-2) Price : Rs. 150.00
   - Vol - 2 (satakas 3-6) 150.00
   - Vol - 3 (satakas 7-8) 150.00
   - Vol -4 (satakas 9-11) 150.00
2. James Burges - The Temples of Satrunjaya. Jain Bhawan. Calcutta; 1977. pp. x+82 with 45 plates (It is the glorification of the sacred mountain Satrunaya.} Price : Rs. 100.00
3. P. C. Samsukha - Essence of Jainism translated by Ganesh Lalwani. Price : Rs. 15.00
4. Ganesh Lalwani - Thus Sayeth Our Lord, Price : Rs. 15.00
5. Lalwani and S.R. Benerjee - Weber's Sacred Literature of the Jains Price : Rs. 100.00

Hindi

6. Ganesh Lalwani - Atimukta (2nd edn) Translated by Shrimati Rajkumar Begani Price Rs. 40.00
7. Ganesh Lalwani - Sraman Samskriti ki Kavita. translated by Shrimati Rajkumari Begani Price : Rs. 20.00
8. Ganesh Lalwani - Nilanjana translated by Shrimati Rajkumari Begani Price : Rs. 30.00
9. Ganesh Lalwani - Candana-Murti translated by Shrimati Rajkumari Begani. Price: Rs. 50.00
10. Ganesh Lalwani-Vardhaman Mahavira Price: Rs. 60.00
11. Ganesh Lalwani-Barsat ki Ek Rat, Price: Rs. 45.00
12. Ganesh Lalwani Pancadasi. Price: Rs. 100.00
13. Rajkumari Begani-Yado ke Aine me. Price: Rs. 30.00

Bengali:

14. Ganesh Lalwani-Atimukta, Price: Rs. 40.00
15. Ganesh Lalwani-Sraman Samskrti Kavita. Price:Rs. 20.00
16. Puran Chand Shyamsukha- Bhagavan Mahavir O Jaina Dharma. Price.Rs. 15.00
17. Satya Ranjan Bandyopadhyay- Prasnottare Jaina-dharma Price:Rs. 20.00

मानव जीवन नश्वर हैं उसमें भी आयु तो बहुत ही परिमित है
एकमात्र मोंक्ष मार्ग ही अविचल है यह जानकर
काम भोगो से निवृत हो जाना चाहिए।

*

G.C. Jain
A-40 N.D. S.E-11
New Delhi - 110049
Tel : 625-7095/0330

WB/RNP-45
Vol. XXIV No. 12 TITTHAYARA March 2001
Registered with the Registrar of Newspapers for India
under No. 30181/77

कोहो पीइं पणासेइ, माणी विणयनासणो।
माया मित्ताणि नासेइ, लोभो सव्वविणासणो।।

क्रोध प्रीति का नाश करता है,
मान विनय का नाश करता है,
माया मित्रता का नाश करती है,
और लोभ सभी सद्‌गुणों का नाश कर देता है।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 666 7212/7225